69वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर निदेशक महोदय का उद्‌बोधन

प्रिय साथियो, भाईयों, बहनों एवं प्यारे बच्चों

आज हम अपने देश का 69वां स्वाधीनता दिवस मनाने के लिये यहां पर एकत्रित हुए हैं । आपको मालूम है कि आज से ठीक 68 वर्ष पूर्व 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ था ।

इस राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर मैं इस निदेशालय के निदेशक के नाते यहां पर कार्यरत् सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, अस्थायी कर्मचारियों, सभी मजदूरों एवं उनके परिवार के सदस्यों को अपनी एवं निदेशालय परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ । आज के दिन हमारे देश एक का जन्म हुआ था और देश के लोगों ने खुली हवा में सांस ली थी ।

1947 से पहले लगभग 300 वर्षो तक देश अंग्रेजों का गुलाम रहा और उसके पहले इसे मुगलों ने लूटा–स्वाधीनता के लिए एक लंबी लड़ाई लड़ी गई । कई शहीदों के बलिदान स्वरूप हमें आजादी मिली ।

आज हम राजनीतिक रूप से पूरी तरह से स्वतंत्र है– अपना राज है, अपनी सरकार है, एक दायरे में रहते हुए कुछ भी नेक काम करने की स्वतंत्रता है ।

1947 से पहले ऐसा नहीं था – कल्पना करें कि उस समय के लोगों का जीवन कैसा होता होगा उनकी मानसिक दशा कैसी होती होगी ? हम उन शहीदों को नमन करते हैं, जिनकी वजह से आज हम इस खुली हवा में सांस ले रहे हैं ।

हमारे से भी – वर्तमान पीढ़ी के नागरिकों से यह अपेक्षा की जाती है कि हम भी अपने कार्यकाल में या जीवनकाल में कुछ ऐसा कर जायें ताकि आने वाली पीढ़ियां भी हम पर नाज कर सकें ।

आज के दिन पिछले एक वर्ष में हुई गतिविधियों और उपलब्धियों पर हम बात करते हैं – मुझे आज चौथी बार अपने निदेशालय के प्रांगण में स्वाधीनता दिवस के अवसर पर अपने भारत देश का झण्डा फहराने का मौका और आपको संबोधित करने का अवसर प्राप्त हुआ है ।

दरअसल यह भी कोई करिश्में से कम नहीं है एक विद्यार्थी जिसने कभी स्कूल से आगे पढ़ने की कल्पना न की हो, वह एम.एस.सी./पी.एच.डी तक की पढ़ाई करके एक वैज्ञानिक बन जायेगा और फिर एक राष्ट्रीय संस्थान का निदेशक । मैं जब अपने व्यक्तिगत पिछले 40 वर्ष पहले यानि 1975 में जब मैं शायद 10वीं कक्षा में था, को याद करता हूँ तो विश्वास ही नहीं होता है । यह सब लोगों के लिए उदाहरण है कि कोई भी व्यक्ति एक निचले स्तर से उठकर अपनी मेहनत और लगन से काम करते हुए सब कुछ हासिल कर सकता है ।

पिछले वर्ष इस मौके पर मैनें आपसे विस्तार से चर्चा की थी और अपना लिखित भाषण भी आप तक बाद में पहुंचाया था । पिछले वर्ष हमने अपने निदेशालय का रजत जयंती वर्ष मनाया था, तथा कई और भी कार्यक्रम आयोजित किये गये और 26वें वर्ष में प्रवेश किया था । अपने 26वें वर्ष में हमने क्या कीर्तिमान स्थापित किए, किन ऊंचाईयों को छुआ, और जो काम हमने किये हैं, उनका उल्लेख करना चाहूँगा । हम जो भी काम करते हैं वह काम दिखना चाहिए । उसकी गिनती की जानी चाहिए ।

जैसा कि हम अपने व्यक्तिगत जीवन में भी देखते है कि एक वर्ष में क्या बदलाव हुये हैं– जिनके बच्चे स्कूल–कॉलेज में पढ़ते हैं उनकी एक क्लास आगे बढ़ गई, किसी की पढ़ाई पूरी होकर नौकरी लग गई, शादी हो गई मकान बन गया या कोई और संपत्ति हमने अर्जित कर ली । कहने का मतलब है कि जो भी किया है वह दिखता है, जिसे परिमाणित

(quantify) किया जा सकता है । ठीक उसी तरह जो काम हमने अपने निदेशालय में किये है वह भी दिखना चाहिये, परिमाणित होना चाहिये और उसकी गुणवत्ता भी होनी चाहिये ।

हमारे यहां पर काम करने का उद्धेश्य क्या है ? यह निदेशालय सिर्फ हमें व्यक्तिगत या अपने परिवार, सगे–संबंधियों की परवरिश करने के लिये तो स्थापित नहीं हुआ है । इसका एक बड़ा उद्धेश्य है । मुख्यतः हमारा काम अनुसंधान करना है, खरपतवार प्रबंधन के विषय के ऊपर जो समस्याऐं किसानों को और आम जनता को खरपतवारों से संबंधित आ रही है उनके ऊपर अनुसंधान करना, उनके निवारण हेतु समाधान खोजना, तकनीक विकसित करना और उस तकनीक को निदेशालय के बाहर, जो आम जनता हमारी ओर देख रही है उन तक इस तकनीक को पहुंचाना है ।

जहां तक अनुसंधान के क्षेत्र में उपलब्धियों का प्रश्न है – तो हमने कोई चमत्कार (Miracle) तो नहीं किया – लेकिन एक संतोषजनक प्रगति उस दिशा में जरूर की है ।

हमने जो अनुसंधान के 5 कार्यक्रम 2012 में शुरू किये थे उनके परिणाम अब दिखने लगे हैं । हमारे द्वारा विकसित तकनीकों का विस्तार भी एक बड़े पैमाने पर हुआ है ।

15 अगस्त 2014 से लेकर अब तक कुछ एक विशेष बातों का जिक्र करूंगा ।

29 सितंबर 2014 को अल्प समय के लिये ही सही अपने महानिदेशक महोदय का निदेशालय में आगमन हुआ और उनका मार्गदर्शन मिला था ।

अक्टूबर–नवंबर 2014 में हमने मिड–टर्म रीव्यू मीटिंग की थी काफी विस्तार से हर बिन्दु पर चर्चा की थी और आगे कैसे बढ़ना है, उन बातों का भी अपनी सिफारिशों में उल्लेख किया था ।

पांच प्रशिक्षण कार्यक्रम – वैज्ञानिकों के लिए, कृषि विभाग के अधिकारियों के लिये, विद्यार्थियों के लिए और किसानों के लिए भी हमने आयोजित किये ।

कृषि शिक्षा दिवस, औद्योगिकी दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस को मनाया गया, कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ दूसरी बार अन्तराफलक बैठक की गई । निदेशालय का 27वां स्थापना दिवस भी 22 अप्रैल 2015 को मनाया गया ।

एक नई पहल इस बार 21 अप्रैल 2015 को की गई जिसमें पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया जिसका विशेष प्रभाव पत्र–पत्रिकाओं एवं दूरदर्शन के माध्यम से जनमानस तक प्रचारित हुआ ।

हमने अपने निदेशालय के काम–काज में और कई सुधार किये जिन तकनीकों का विकास हमारे वैज्ञानिकों ने किया है, उनको अपने निदेशालय के प्रक्षेत्र पर ही एक बड़े भाग में किया गया ।

मेरा यह मानना है कि कोई भी तकनीक जो हम विकसित करते हैं, उसको सबसे पहले तो स्वयं को ही अपनाना चाहिये, तभी हम दूसरों को उसे अपनाने के लिये कह सकते है ।

हमने अपनी तकनीकों को जबलपुर के आस–पास और व्यापक स्तर तक पहुंचाने की कोशिश की है – जैसे कटनी, दमोह, नरसिंहपुर आदि क्षेत्रों तक पहुंच पाये हैं और उनके बहुत ही उत्साहवर्धक परिणाम निकले हैं ।

हमने अपने अनुसंधान फार्म को एक संरक्षित खेती पर आधारित फार्म बनाने की पहल जो 2012 में की थी उसे और आगे बढ़ाया है । इसका फायदा यह हुआ है कि हमारा काम कम खर्च, कम समय, कम प्रदूषण के साथ हुआ है और इससे वातावरण एवं मिट्टी की दशा में अवश्य सुधार हुआ है ।

अभी मैं आपको इसी वर्ष का ही उदाहरण देता हूँ – 2012 में हम लगभग सारे प्रक्षेत्र पर धान का उत्पादन रोपाई विधि से करते थे जिसको हम धीरे–धीरे कम करते गए और वर्तमान मौसम में थोड़े से क्षेत्रफल को छोड़कर बाकी सारे प्रक्षेत्र पर धान की फसल सीधी बिजाई के माध्यम से लगाई गई है । सीधी बिजाई ही नहीं बल्कि बिना जुताई के सीधी बिजाई और एक बहुत अच्छी फसल वर्तमान में प्रक्षेत्र पर खड़ी है । हमने एक इंच जमीन भी खाली नहीं छोड़ी है जो कि शायद पहली बार हुआ है ।

इसके कई फायदे हुए जो रोपाई का काम अगस्त के दूसरे पखवाड़े तक जाता था आज वह 15 जुलाई के पूर्व ही समाप्त हो गया था । और जो लागत ढाई से तीन लाख रूपये के करीब आती थी वह अब कुछ हजारों तक हो गई है । यह मैं अपने निदेशालय की एक मुख्य उपलब्धि मानता हूँ और इसके लिये सभी संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों जिनमें श्री

भगुन्ते प्रसाद, श्री आर.एस. उपाध्याय, श्री एम.पी. तिवारी, श्री घनश्याम विश्वकर्मा एवं श्री जे.एन. सेन को विशेष तौर से बधाई देता हूँ, इसके अलावा अस्थायी वर्ग के कर्मचारियों को भी शुक्रिया अदा करता हूँ ।

प्रशासनिक स्तर पर भी उल्लेखनीय कार्य हुए है, खासकर वित्त एवं लेखा अनुभाग में जो आडिट पैरे पिछली कुछ त्रुटियों के कारण लंबित चले आ रहे थे, उनका निराकरण भी हुआ है, दो–तीन मसले और भी है जो परिषद् से संबंधित है उनके निपटारे का भी काम चल रहा है ।

सबसे खुशी की बात यह है कि पिछले तीन वर्षो में कोई नई वित्त प्रबंधन से संबंधित समस्या नहीं आई है । हमने एक स्वच्छ, पारदर्शी एवं निष्पक्ष तरीके से कार्य को करने की कोशिश की है और इसके लिए मैं वित्त अनुभाग से संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों, श्री एम.एस. हेडाऊ, श्री संदीप धगट एवं श्री टी. लखेरा को हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ ।

भारत सरकार के निर्देशानुसार हमने पूरी श्रद्धा से ''स्वच्छ भारत अभियान'' को पिछले वर्ष सितम्बर 2014 से चलाया है, हालांकि यह कार्यक्रम एक वर्ष के लिये था किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि इस कार्यक्रम को आगे भी चलते रहना चाहिये । निदेशालय के बाहर भी इसे ले जाना चाहिये । जो लोग इस बात से सहमत नहीं है, उन्हें थोड़ा आत्मचिन्तन करने की आवश्यकता है ।

पिछले वर्ष हमने आज के दिन पौधा रोपण का कार्यक्रम किया था आज भी करेगें और आप देखेगें कि इसमें कितनी प्रगति हुई है ।

अभी आने वाले 2 महीनों में एक और बड़ा कार्यक्रम होने जा रहा है वह कार्यक्रम हमारे निदेशालय में तो नहीं है, लेकिन इसमें हमारा निदेशालय सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है वह है 25^{th} Asian- Pacific Weed Science Society Conference । यह एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है जो हैदराबाद में 13–16 अक्टूबर 2015 को है, जो कि हमारे निदेशालय द्वारा आयोजित किया जाना है । जिसके लिये तैयारियां जोर–शोर से चल रही हैं । मैं निदेशालय से संबंधित सभी वैज्ञानिकों एवं अन्य अधिकारियों से निवेदन करूंगा कि इस कार्यक्रम को पूर्णतः सफल बनाने में अपना पूरा सहयोग देगें ।

अभी हम एक और बढ़िया कार्यक्रम करने जा रहे हैं, वैसे एक प्रकार से 2012 से ही यह कार्यक्रम चला रहे थे लेकिन अभी इसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के निर्देशानुसार और व्यापक स्तर पर चलायेगें ।

यह कार्यक्रम है ''मेरा गांव मेरा गौरव'' । यह एक अनोखी पहल हैं इसमें एक वैज्ञानिक को कम से कम एक गांव अपनाना है ओर उसे एक आदर्श (Model) गांव के रूप में विकसित करना है ।

इसकी रूपरेखा डा. पी.के. सिंह द्वारा तैयार की जा रही है । इस माह के अंत तक सभी गांवो का चयन हो जायेगा । इस संबंध में यह कहना चाहूँगा कि क्यों न अपने कार्यालय के जो अधिकारी एवं कर्मचारी है और उनके गांव लगभग 100 कि. मी. के दायरे के अंदर है, उन्हें अपना लिया जाये । जो भी स्टाफ के सदस्य इस तरह से अपने गांव को अपने निदेशालय को गोद लिवाना चाहते है वह डा. पी.के. सिंह से संपर्क कर सकते है ।

साथियों, बातें तो करने को बहुत हैं – जब से मैं इस निदेशालय में आया हूँ मेरा एक ही ध्येय है कि इसे कैसे और आगे ले जाया जाये । मैं लगतार 24 घन्टे इसी दिशा में सोचता रहता हूँ कि आगे क्या करूं !

16–17 घन्टे तो आफिस में रहता हूँ, तथा सोते समय सपने में भी निदेशालय की प्रगति के बारे में ही सोचता हूँ । सुबह उठकर जो बातें याद आने लगती है कि आज यह–यह काम करना है । उनको डायरी में नोट करता हूँ और फिर सुबह 7.00 बजे से आफिस में आकर उनको क्रियान्वित करने की कोशिश करता हूँ ।

मैं जब यहां आया था तो कभी यह नहीं सोचा था कि मैं निदेशक के पद पर रहते हुए जो विशेषाधिकार/सुविधाऐं या अन्य फायदे हैं उनको प्राप्त करूंगा बल्कि यह सोचा था कि अपनी पूरी ताकत और सूझबूझ से इस निदेशालय की उन्नति के लिये ही कार्य करूंगा ।

पिछले साढ़े तीन वर्षो में आपने देखा और महसूस किया होगा कि कुछ क्षेत्रों में जरूर सुधार हुआ है जो दिख रहा है, लेकिन मुझे इस बात का भी बहुत दुख है कि कई क्षेत्रों में पूरा जोर लगाने के बाद भी कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आये हैं । उनका मैं अभी जिक्र नहीं करूंगा । हम लोग नवंबर मैं फिर आत्मचिंतन बैठक के माध्यम से करेगें जिस पर विस्तार से चर्चा की जायेगी ।

आप लोगों ने आज सुबह अपने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का लाल किले से देश के नाम उद्बोधन सुना होगा, यदि नही तो बाद में दूरदर्शन पर देखना उन्होनें कृषि से संबंधित कुछ बातों का उल्लेख किया है । हमारे कृषि

मंत्रालय का नाम बदलकर ''कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय'' कर दिया गया है । अब किसान कल्याण की भी योजनाऐं बनेगीं । कुछ समय पहले प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों से एक आह्वान किया था कि जो नागरिक संपन्न हैं, समृद्धशाली है – उन्हें किसी भी रहम या रियायत की आवश्यकता नहीं है वह स्वेच्छा से एल.पी.जी. सिलेण्डर पर दी जानी वाली छूट (Subsidy) छोड़ दें । हमारे निदेशालय में इस दिशा में पहल डॉ. भूमेश कुमार ने की, उनसे प्रभावित होकर मैनें भी की । अब 20 लाख लोग इस अभियान में शामिल हो गये हैं ।

मुझे खुशी है कि हमारे निदेशालय के कुछ और सदस्यों ने भी यह छूट छोड़ने का फैसला लिया है, मैं डॉ. शोभा सौंधिया, डॉ. सी. सारथम्बल, श्री आर.एस. उपाध्याय, श्री एम.पी. तिवारी एवं श्री बसंत मिश्रा को हार्दिक बधाई देता हूँ और उनके प्रयास की सराहना करता हूँ । अच्छी बातों को अपनाने में देरी नहीं होनी चाहिये ।

प्रधानमंत्री ने कृषि वैज्ञानिकों से आग्रह किया है कि वे ''प्रति बूंद अधिक फसल'' "(Per drop More crop)" के नारे को अपनाऐं – अपनी कार्यशैली में बदलाव करें, कम समय में, कम पानी में, कम लागत में – अधिक पैदावार अधिक लाभ करके दिखायें ।

मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारी किसी से कोई द्वेष भावना नहीं है, जिन लोगों को ऐसा महसूस हो रहा हो वह अपने अंदर झांक कर देखें कि हमारे में क्या कमी रह जा रही है जो हम अपेक्षाओं के अनुसार अपना कार्य नहीं कर पा रहे हैं । निदेशक होने के नाते मेरा यह कर्तव्य है कि, मैं हर किसी से उसके काम का हिसाब पूछूं और अगर कार्य संतोषजनक नहीं है तो उसके ऊपर उचित कार्यवाही करूँ ।

दो वर्ष तक मैनें सभी को समझानें–बुझानें का अथक प्रयास किया है कि अतीत को भूलकर वर्तमान में कुछ करके दिखाईये । जिन लोगों के ऊपर कुछ इस तरह की हीन भावना आ गई है उससे उभरने का एक ही रास्ता है कि वह कुछ करके दिखाऐं । जो सुविधायें चाहिए वह हम देने को तैयार हैं । ऐसा क्या है, जो हम नहीं कर सकते है सब कुछ संभव है । हम अपने निदेशालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का सबसे अच्छा संस्थान बनाकर एक अनूठा उदाहरण पेश कर सकते हैं ।

इस निदेशालय में हर किसी का एक विशेष स्थान है, महत्व है, श्री गंगाराम से लेकर श्री अजीतराम तक । सभी को अपनी डियूटी पूरी कर्तव्य निष्ठा से निभानी है तभी हम इस निदेशालय को और ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं ।

अंत में मैं एक उदाहरण के साथ अपनी बात को विराम देना चाहूँगा । कुछ बड़े–बड़े वैज्ञानिक हमारे देश में हुए हैं, जिनको हम प्रेरणा स्त्रोत (Role Model) के रूप में देखते है । खरपतवार विज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ बड़े नाम है जैसे कि डॉ. एस.के. मुखोपाध्याय, डॉ. व्ही.एम. भान, डॉ. एच.एस. गिल, डॉ. एस. शंकरन, डॉ. व्ही.एस. राव, और उसके बाद डॉ. आर.के. मलिक. डॉ. एल.एस. ब्रार इत्यादि ।

मैं पिछले कुछ महीनों से डॉ. व्ही.एस. राव के संपर्क में हूँ । हम एक किताब तैयार कर रहे हैं "Weed Science in Asian Pacific Region" इसमें 19 देशों के वैज्ञानिकों ने इस किताब के लिए अध्याय भेजे हैं । डॉ. व्ही.एस. राव इस किताब के मुख्य संपादक हैं । मैं डॉ. राव की वचनबद्धता को देख कर बहुत प्रभावित हूँ । वे लगभग 80 वर्ष की आयु के होगें, लेकिन इस उम्र में भी इतना काम करते हैं कि हम 40–50 वर्ष की उम्र के लोग भी नहीं कर पाते ।

अभी उन्होनें हाल ही में एक पंक्ति अपनी ई–मेल में लिखी है "I won't not allow myself to sleep until I complete this work" हम लोगों को अपने काम के प्रति इस तरह कीभावना रखनी चाहिये, ऐसे लोगों से प्रेरणा लेनी चाहिये हम उन तक तो नहीं पहुंच सकते लेकिन उनको स्पर्श तो कर सकें ।

डॉ. एन.ई. बोरलॉग की एक पंक्ति यहां हमारे निदेशालय के द्वार पर लिखी है –

"Try reach for the stars – you may not get them but you will at least get the stardust on your hands".

अंत मे मैं फिर आप सभी को 69वें स्वाधीनता दिवस की शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ, इसी आशा ओर विश्वास के साथ कि यह निदेशालय आने वाले वर्षो में और अच्छा कार्य करके दिखायेगा जिस पर हम सभी को गर्व होगा ।

जय हिन्द ।